0 - 9 ✓

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

मु.उ.पु. 24 पृष्ठ

कार्यालयीन उपयोग के लिए

निम्न रिक्तियों की सही प्रविष्टि परीक्षार्थी द्वारा की जाए।

परीक्षा के नाम की सील: [illegible]

1. विषय कोड | 4 | 3 | 0 | परीक्षा का विषय पशुपालन

2. परीक्षा का माध्यम हिन्दी परीक्षा की दिनांक 23-03-09

3. परीक्षार्थी प्रश्न पत्र का पूर्ण कोड नम्बर (सेट A, B, C, या D) अनिवार्यतः भरें

कोड	सेट
U-2053	

केन्द्र क्रमांक की सील
[illegible] 162005

... सील के निशान से मिलाकर लगायें

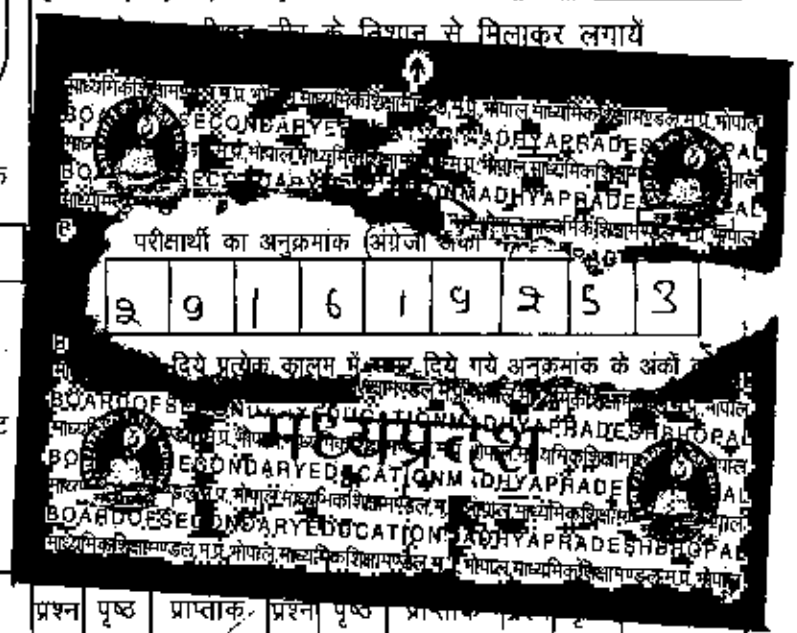

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYAPRADESH BHOPAL

परीक्षार्थी का अनुक्रमांक (अंग्रेजी अंकों में)

2	9	1	6	1	9	2	5	3

... दिये प्रत्येक कालम में ... दिये गये अनुक्रमांक के अंकों ...

मध्यप्रदेश

पर्यवेक्षक / केन्द्राध्यक्ष का प्रमाणीकरण

प्रमाणित किया जाता है कि परीक्षार्थी द्वारा निम्नानुसार पूरक उत्तरपुस्तिका ली गई है :-

क :- संख्या शब्दों में Nil अंकों में X

ख :- परीक्षार्थी की बैठक व्यवस्था कक्ष क्रमांक [illegible] में है।

ग :- उत्तर पुस्तिका पर प्रश्न-पत्र का कोड नम्बर एवं सेट सही लिखा है।

हस्ताक्षर (पर्यवेक्षक) [signature]

नाम प्यारीलाल वर्मा पद प्रा.शि.

पता / संस्था P. S. पिपरवार

परीक्षार्थी द्वारा ली गई सभी पूरक उत्तर पुस्तिकायें, मुख्य उत्तर पुस्तिका के साथ संलग्न हैं।

[signature] हस्ताक्षर केन्द्राध्यक्ष

B S E M P

प्रश्न	पृष्ठ	प्राप्तांक	प्रश्न	पृष्ठ	प्राप्तांक
8					
9					
10	12				
कुल प्राप्तांक					

परीक्षार्थी, परीक्षक से अपेक्षा है कि वे पृष्ठ भाग पर दिये गये निर्देशों का यथेष्ट पालन सुनिश्चित करेंगे।

प्रमाणित किया जाता है कि उपरोक्तानुसार संलग्न पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या मूल्यांकन समय सही पाई गई हैं। होलोग्राम एवं ... चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही उत्तरपुस्तिका का मूल्यांकन किया गया है। मैंने सभी प्रश्नों के उत्तरों का गहन मूल्यांकन किया है। उत्तर पुस्तिका के अन्दर के अंक एवं कव्हर पृष्ठ पर दर्शाये अंक एक समान है एवं योग पूर्णतः सही है।

हस्ताक्षर (परीक्षक) [signature]

परीक्षक क्रमांक 992070

हस्ताक्षर (उपमुख्य परीक्षक)

दिनांक........

हस्ताक्षर (मुख्य परीक्षक)

दिनांक........

परीक्षार्थी के लिए निर्देश

1. परीक्षार्थी को अपना अनुक्रमांक/विषय/माध्यम/दिनांक एवं प्रश्न–पत्र का कोड (समूह) मुख पृष्ठ पर अंकित करना अनिवार्य है। अन्यत्र कहीं भी नहीं लिखा जाएगा।
2. अनुक्रमांक नीचे दिये गए उदाहरण अनुसार लिखा जाए :–

1	8	2	4	3	9	5	6	8
एक	आठ	दो	चार	तीन	नौ	पाँच	छः	आठ

3. उत्तर पुस्तिका के दोनों ओर पृष्ठों में लिखें। बीच में रिक्त स्थान न छोड़ें। भूल से छूटा/रिक्त स्थान तथा शेष खाली पृष्ठों को क्रास किया जाए।
4. परीक्षार्थी प्रश्न पत्र हल करते समय ही, कव्हर पृष्ठ पर दी गई तालिका में प्रश्न क्रमांक के सम्मुख वाले कालम में उत्तरपुस्तिका का वह पृष्ठ क्रमांक अनिवार्य रूप से अंकित करें जिस पर प्रश्न का उत्तर लिखा गया है। यदि पूरक उत्तरपुस्तिका का उपयोग किया गया हो, तो उस पर 25 से प्रारंभ करते हुए पृष्ठ क्रमांक परीक्षार्थी द्वारा स्वयं डाले जाएँ।

परीक्षक के लिए निर्देश

1. केवल उन्हीं उत्तरपुस्तिकाओं का मूल्यांकन करें जिन पर होलो क्राफ्ट स्टीकर चस्पा है।
2. उत्तरपुस्तिका का मूल्यांकन होलो क्राफ्ट स्टीकर को चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही किया जाये।
3. बिना होलो क्राफ्ट स्टीकर वाली तथा फटे हुए होलो क्राफ्ट स्टीकर वाली सभी उत्तरपुस्तिकाऐं मूल्यांकन हेतु परीक्षा नियंत्रक, माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल को व्यक्तिशः रूप से भेजी जाये।

मूल्यांकन केन्द्र के लिए निर्देश

1. **O.M.R. SHEET** पर प्राप्तांक की प्रविष्टि करने हेतु केवल वही उत्तरपुस्तिकाएँ प्राप्त करें, जिनका मूल्यांकन होलो क्राफ्ट स्टीकर को चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही किया गया है। यदि होलो क्राफ्ट स्टीकर फटा हुआ पाया जाता है तो ऐसी उत्तरपुस्तिकाऐं मूल्यांकन केन्द्र अधिकारी को पृथक से सौपी जाएँ। ऐसे प्रकरणों के प्राप्तांकों की प्रविष्टि **O.M.R. SHEET** में नहीं की जाए। मूल्यांकन केन्द्र अधिकारी ऐसी उत्तरपुस्तिकाऐं पुनः मूल्यांकन के लिये परीक्षा नियंत्रक, माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल को व्यक्तिशः रूप से सौपेंगे।
2. उत्तरपुस्तिका के मुख्य पृष्ठ में अंकों एवं शब्दों में अंकित प्राप्तांकों को मिलान कर **O.M.R. SHEET** में अंकों की सटीक प्रविष्टि करें।
3. **O.M.R. SHEET** पर प्रमाणीकरण कर हस्ताक्षर करें।

योग पूर्व पृष्ठ

मध्यप्रदेश

प्रश्न क्रमांक - 1

उत्तर :- (अ) केन्द्रीय बकरी अनुसन्धान संस्थान स्थित है-
(ii) उत्तरप्रदेश। में।

(ब) विदेशी नस्ल की भेड़ है
(iii) मेरिनो।

(स) वह नाम जिससे सिंघला मछली को जाना जाता है, है -
(ii) टिंगरा।

(द) सूअरों में ब्रुसिलोसिस बीमारी का कारण है-
(i) जीवाणु

(इ) मुर्गियों में जीवाणु द्वारा फैलने वाली बीमारी है
(i) पुलोरम।

—x—x—

BSEMF

पृष्ठ के

प्रश्न क्रमांक - 2

उत्तर:-

(अ) मोंगरी — (iv) मत्स्य

(ब) गुरेज — (iii) भेड़ ।

(स) नाविक ज्वर — (v) गलघोंटू

(द) विषाणु — (ii) न्यूक्लिक अम्ल

(इ) सहकारिता का सिद्धान्त — समानता ।

प्रश्न क्रमांक - 3

(i) लंगड़ी रोग की मृत्युदर 95 प्रतिशत है।

(ii) मेरिनो भेड़ का मूल स्थान स्पेन है।

(iii) मुर्गियों में सफेद रंग के दस्त होना पुलोरम रोग का।

(iv) एक आदर्श कुक्कुटशाला को धरातल भूमि 2 फुट ऊँचा होना चाहिए।

(v) मादा शूकर का गर्भकाल 114 दिन का होता है।

B S E M P

प्रश्न क्रमांक - ५

उत्तर:- (i) सन् 1965 में
(ii) विष ज्वर
(iii) 18 दिन
(iv) 250 मुर्गियाँ
(v) रोहू मछली।

x x

प्रश्न क्रमांक-5 का अथवा

फिटकरी:—
(i) बहते हुए खून को रोकने में
(ii) सर्जन ऑपरेशन करने से पूर्व हाथ धोने के एन्टीबायोटिक के रूप में करते हैं।

तूतिया:—
(1) फुटबाथ में 1% तूतिया के घोल का प्रयोग पशुओं को पाद स्नान कराने के लिए।
(2) इसका 0.25% दवा के रूप में किया जाता है।

BSEMP

प्रश्न क्रमांक -

उत्तर :- पशुओं में २

उत्तर :- पशुओं में संक्रमण तथा धूत के रोगों के फैलने के स्त्रोत :-

(1) रोगी पदार्थों के द्वारा :-

सं०

P. T. O.

P. T. O.

अंक

उत्तर :—

प्रश्न क्रमांक - 7

खुरपका - मुँहपका

रोग का कारक :—

यह रोग कई प्रकार के विषाणु द्वारा फैलता है। वैली तथा फेरी ने 1922 में 'A' और 'O' प्रकार की वाइरस को इस रोग को उत्पन्न करने वाला बताया। वोल्डमैन तथा ट्रॉटवैन ने 'C' प्रकार की वाइरस को इस रोग को उत्पन्न करने वाला बताया। दक्षिण अफ्रीका में यह रोग अन्य प्रकार की वाइरस SAI_1, SAI_2 के द्वारा फैलता है।

लक्षण :—

(1) पशु को 105°F - 106°F तक तेज बुखार आता है।

(2) पशु के मुँह, खुर, तथा जीभ पर छाले पाये जाते हैं।

(3) पशु जुगाली करना कम कर देता है।

पृष्ठ के अंकों का योग

BSEMP

(प) पशु के नाक से स्राव बहने लगता है।

उपर्युक्त लक्षणों के आधार पर रोग की पहचान कर ली जाती है पर सन्देह होने पर छालों के तंतुओं को इन्जेक्शन में भर कर सफेद चूहों में लगाया जाता है, यदि उनमें रोग उत्पन्न हो जाए तो खुरपका - मुँहपका समझना चाहिए,

मृत्युदर :— इसकी मृत्युदर 90-95 % तक होती है।

प्रश्न क्रमांक – 6

B S E M P

उत्तर:— कश्मीरी बकरी के शरीर पर 10-12 सें.मी. लम्बे बाल पाये जाते हैं, इन बालों के नीचे सुन्दर, कोमल व छोटी - छोटी बालों की तह पायी जाती है। इसे पश्मीना कहते हैं।

कश्मीरी बकरी की विशेषताएँ :—

(1) इसके बाल 10-12 लम्बे होते हैं।

(2) इसके सींग सीधे तथा ऐंठे हुए होते हैं।

(3) इसका रंग चितकबरा होता है।

प्रश्न क्रमांक – 8

उत्तर :—

दही बनाते समय ध्यान रखने योग्य बातें ;— दही बनाते समय निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए—

(1) दही में 0.65–0.75% अम्लीयता होनी चाहिए।

(2) दही बनाने के शुद्ध, स्वच्छ व ताजा दूध का प्रयोग करना चाहिए।

(3) दही जमाने के लिए गहरे कूंडों का प्रयोग करना चाहिए।

(4) दही जमाने के अच्छी जामन का प्रयोग करना चाहिए।

(5) दही जमाने के लिए प्रयोग किए जाने वाले जामन में सभी दुग्धाम्ल जीवाणु होने चाहिए।

(6) दही जमाने वाले बर्तन साफ व स्वच्छ होना चाहिए।

(7) दही जमाने में 2-3 दिन की जामन का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

(8) दही सामान्यतः 8-10 घण्टे में जम जाता है परन्तु

(9) गर्मियों में 6-8 घण्टे में तथा सर्दियों में

1 या 2 . . जमता है।

(10) दही में सर्दियों में गर्म स्थान पर तथा गर्मियों में ठंडे स्थान पर रखते हैं।

प्रश्न क्रमांक - 9

उत्तर:— घी के गुणों को प्रभावित करने वाले कारक :—

घी के गुणों को प्रभावित करने वाले कारक निम्न हैं —

(1) घी बनाने की विभिन्न विधियाँ :— घी बनाने की विभिन्न विधियों पर यह निर्भर करता है कि उसमें कितने पोषक अवयव उपस्थित रहते हैं। अतः
- वैज्ञानिक विधि से घी तैयार करने में पोषक तत्त्व सुरक्षित रहते हैं। जबकि देशी विधि से घी तैयार करने में पोषक तत्वों की हानि अधिक होती है।

(2) दुग्ध की उपलब्धता :— दूध की उपलब्धता का घी के गुणों पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ता है।
स्वच्छ दूध न होने पर घी में पोषक तत्व कम होते हैं, जबकि दूध में मिलावट होने पर इसके पोषक तत्वों पर प्रभाव पड़ता है।

(3) पशु की किस्म :—

पशु की किस्म का घी की गुणवत्ता पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ता है। यदि पशु अच्छी किस्म का है, तो उसके दूध से प्राप्त घी उत्तम किस्म का होगा तथा निम्न किस्म का होने पर घी के पोषक गुणों पर प्रभाव पड़ेगा।

(5) मौसम :—

वर्षा ऋतु में पशु का दूध पतला होता है। जबकि अन्य ऋतु में दूध अच्छा होता है। अतः पतले दूध से घी के पोषक तत्व में कमी आ जाती है।

EMP

प्रश्न क्रमांक – 10

उत्तर :— मुर्गियों के लिए आहार का चुनाव करते समय ध्यान रखने योग्य बातें :—

मुर्गियों के लिए आहार का चुनाव करते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए —

BSEMP

(2) खाद्य पदार्थ की पाचकता:—

खाद्य पदार्थ का चुनाव करते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि जो आहार मुर्गियों को दिया जा रहा है, वह उसे पचा पाएगी या नहीं ~~इस बात का ध्यान~~ इसलिए ऐसे खाद्य पदार्थों का चुनाव किया जाता है, जिसकी पाचनशीलता अधिक हो।

(3)
~~प~~ खाद्य पदार्थ की कीमत:—

जो आहार मुर्गियों को दिया जा रहा है, उसकी कीमत का विशेष ध्यान रखना चाहिए अतः जो खाद्य आसानी से और कम कीमत में मिल जाए उसे ही प्रयोग में लाना चाहिए।

(3) खाद्य में पदार्थ में उपस्थित पोषक तत्व:—

खाद्य पदार्थ का चुनाव करते समय ~~कि~~ इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि खाद्य पदार्थ में सभी पोषक तत्व उपलब्ध होने चाहिए।

(4) खाद्य की उपलब्धता:—

खाद्य पदार्थ का चुनाव करते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि जो खाद्य पदार्थ आसानी

आसानी से उपलब्ध हो उसी का प्रयोग करना चाहिए

प्रश्न क्रमांक - 12

उत्तर:— आइसक्रीम ~~को~~ के गुणों को प्रभावित करने वाले कारक:—

आइसक्रीम के गुणों को प्रभावित करने वाले कारक निम्न हैं—

(1) मिश्रण के संसाधन:— मिश्रण के संसाधन पर आइसक्रीम के गुण निर्भर करते हैं, यदि पदार्थों के मिश्रण का संसाधन ठीक प्रकार से नहीं किया जाता है, तो आइसक्रीम के भौतिक व रासायनिक गुणों में परिवर्तन हो जाता है।

(2) आइसक्रीम ~~के~~ में सुवासकर्ता:— आइसक्रीम में अच्छी सुवास उसके सुवास कर्ता पर निर्भर करती है, यदि सुवासकर्ता ठीक है, आइसक्रीम में अच्छी सुवास उत्पन्न होगी।

(3) जमाने के ढंग:— आइसक्रीम के जमाने के ढंग पर उसकी बनावट, आकार निर्भर

करता है। यदि आइसक्रीम ठीक प्रकार से जमाई जाती तो उसका गुण व स्वाद भी अच्छा होता है।

(५) प्रयोग किये जाने वाले पदार्थ:—

यदि प्रयोग किये आइसक्रीम में मुख्य रूप से दुग्ध, सफेदा, संघनित दुग्ध वाष्पित दुग्ध, क्रीम आदि का प्रयोग किया जाता है अतः ये पदार्थ स्वच्छ होना चाहिए।

सुवास कारक:—

आइसक्रीम में अच्छी सुवास पैदा करने के लिए सुवासकारक पदार्थों का प्रयोग किया जाता है अतः इसमें स्ट्रेबरी, चॉकलेट, आदि सुवासकारक मिलाये जाते हैं।

प्रश्न क्रमांक - 13

उत्तर:— दुग्ध चूर्ण बनाने की फुहार शुष्कन विधि:—

दुग्ध का मानकीकरण:—

इसके लिए सर्वप्रथम दुग्ध को मानकीकृत किया जाता है फिर 32.2°C ताप पर 30 मिनट पर गर्म किया जाता है। फिर इसे केन्द्रापग कास से गुजारा जाता है। फिर इसे 62.8°C ताप पर गर्म किया जाता है।

(2) फिर इसे 5:1 में संघनित किया जाता है।

(3) फिर इस संघनित दूध को शोषण कक्ष में भेजा जाता है, जहाँ अति व तीव्र गर्म हवा पहुँचायी जाती है

(4) (5) दूध हवा के सम्पर्क में आते ही पाउडर के रूप में बदल जाता है।

(6) इस तरह 95% का घुलनशील पाउडर तैयार होता है।

BSEMP

प्रश्नक्रमांक - 15

उत्तर:- भारत में मुर्गीपालन में आने वाली प्रमुख बाधाएँ:-

भारत में मुर्गीपालन में आने वाली प्रमुख बाधाएँ निम्न हैं—

(1) पूंजी की कमी:—

हमारा देश के लोग बहुत ही गरीब हैं, अब उनके मुर्गियों को पालने के लिए पूँजी का अभाव है। मुर्गियों के लिए 60% दाने की आवश्यकता होती है। पर हमारे देश में खाद्यान्न की कमी के कारण लोग मुर्गीपालन

नहीं कर पाते हैं।

(२) अण्डा खाने में अंधविश्वास:—

कुछ लोगों की मान्यता है कि जो मुर्गियों में जीव होता है, जीव की हत्या मांसाहारी भोजन के अंतर्गत आता है, अत: जो लोग हिन्दू होते हैं, वे अण्डा नहीं खाते हैं।

(३) अण्डों की माँग में भिन्नता:—

भारत में अण्डों की माँग में भिन्नता पायी जाती है। अत: बाजार में अण्डा की माँग सर्दियों में कम तथा गर्मियों में अधिक होती है। अत: इस कारण मुर्गीपालन नहीं हो पाता है।

धार्मिक रीतियों के कारण:—

हमारे देश में लोग धार्मिक मान्यता के कारण अण्डे नहीं खाते हैं। हिन्दू लोग अण्डा खाना पाप समझते हैं।

बीमारियों के कारण:—

जो मुर्गियाँ देखने में स्वस्थ होती हैं, वे बीमार होती हैं। अत: किसान को डर बना रहता है, इस कारण किसान मुर्गीपालन नहीं करते हैं।

BSEMP

प्रश्न क्रमांक - 15

[बर्ड फ्लू]

उत्तर:—

रोग का कारण:—

यह रोग एवियन इन्फ्लूएन्जा के कारण होता है। इस रोग के प्रमुख वाहक प्रवासी वन्यप्राणी होते हैं। संसार में इस विषाणु की 144 उपप्रकार में पाँच प्रकार के प्रकार सबसे अधिक घातक बीमारी उत्पन्न करने वाले हैं। यह रोग बहुत ही शीघ्रता से फैलने वाला रोग है, एक साथ अनेक मुर्गियाँ बीमारी होती हैं।

लक्षण:—

(1) पशुओं में अचानक मृत्युदर बढ़ जाती है।
(2) ~~आक्रमण पक्षी~~ बिना लक्षण दिखे पक्षी मर जाते हैं।
(3) पक्षियों को दस्त होने लगते हैं।
(4) पक्षियों के आँख, गर्दन मुँह पर सूजन आ जाती है।
(5) इसमें कलंगी पीली पड़ जाती है।
(6) इसमें मृत्युदर 90-100% होती है।
(7) इसमें पक्षी कमजोर हो जाते हैं।

रोकथाम के उपाय:—

रोग के लक्षण का पता चलना बड़ा ही मुश्किल होता है, उसे पता चले बिना कोई उपाय नहीं किया जा सकता है। भारत में इस रोग की पुष्टि कुछ समय पूर्व ही हुई है।

अतः जैव उपाय सस्ता साधन है —

(1) पशुओं की पशुशाला स्वच्छ होनी चाहिए

(2) बाहर से आए पशुओं का प्रवेश वर्जित कर देना चाहिए।

(3) पशुशाला की सफाई करनी चाहिए

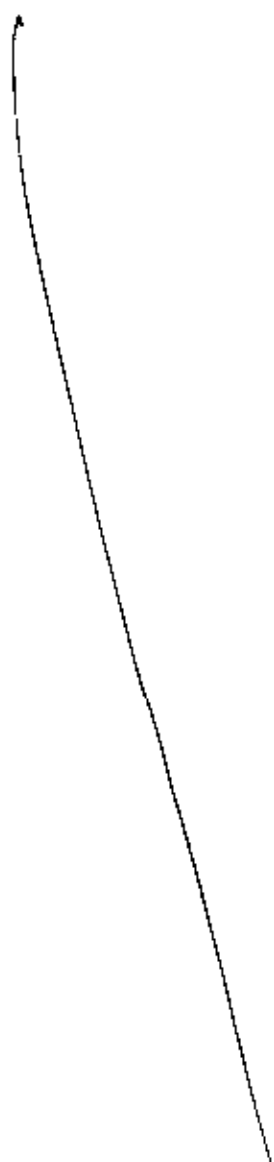

पृ

प्रश्नक्रमांक – 11

उत्तर:– आदर्श राशन :—

वह राशन जो पशुओं को उसके शरीर भार के अनुसार देने पर उसकी सभी आवश्यक तत्वों की पूर्ति करता है आदर्श राशन कहलाता है।

आदर्श के प्रमुख गुण :—

(1) पौष्टिकता :—

पशुओं को ऐसा आहार देना चाहिए जो पौष्टिक हो, तथा इसमें सभी पोषक तत्व उपलब्ध हों जो पशु के लिए आवश्यक है अत: पशु का राशन पौष्टिक होना चाहिए।

(2) स्वच्छता :—

पशुओं को जो आहार दिया जाता है, उसमें स्वच्छता का विशेष ध्यान रखना चाहिए अत: पशुओं को स्वच्छ राशन देना चाहिए।

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

BSEMP

(3) रसीलापन; —

पशुओं के आहार में बरसीम, लोबिया, लूसर्न आदि रसीले चारे देने के कारण पशु इसे को चाव से खाते हैं।

(4) भारीपन; —

पशुओं का आहार भारी होना चाहिए क्योंकि क इस आहार से पशु की संतुष्टि हो जाती है। पशु की तृप्ति हो जाती है।

(5) स्वच्छ जल; —

पशुओं को स्वच्छ जल पिलाने से वह उसकी सभी क्रियाओं को पूरा करता है। स्वच्छ जल पशु के लिए आवश्यक अवयव है।

— x — x —

प्रश्न क्रमांक – 11

उत्तर:– ~~पशुओं के~~

उत्तम बैल के लक्षण:–

उत्तम बैल के निम्न लिखित लक्षण हैं–

"छोटी पूँछ, छोटा कान
यही बैल की है, पहचान"

1) समतल पुट्ठे:–

जिस बैल के पुट्ठे समतल होते हैं, उसमें रक्त का संचार सही होता है। ये बैल भार ढोने के काम आता है।

2) मुलायम तथा पतली त्वचा:–

जिन बैलों की त्वचा मुलायम तथा पतली होती है, वह बैल सबसे अधिक उत्तम होता है।

पृष्ठ के अंकों का योग

3) चमकीली आँखे:–

जिन बैलों की आँखे चमकीली होते हैं, वे शारीरिक रूप से

रूप से स्वस्थ होते हैं। अतः ऐसे बैल कृषि कार्य के लिए अच्छे समझे जाते हैं।

(५) लम्बी गर्दन :—

जिन बैलों की गर्दन लम्बी होती है वे कृषि कार्य के लिए अच्छे होते हैं। तथा वे उत्तम होते हैं।

सीधे कान :—

जिस बैल के कान सीधे होते हैं, इनमें रक्त का संचार ठीक प्रकार होता है। तथा ऐसे बैल कृषि कार्य के लिए अच्छे होते हैं।

× × ×

पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 24 के अंक = कुल अंक

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग